Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-135-137

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 135-137
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

Dr. Judy Lalengvari

Principal, Mizoram Hindi Training College, Aizawl.

Corresponding Author :

Dr. Judy Lalengvari

Principal, Mizoram Hindi Training College, Aizawl.

प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक शोधपरक अध्ययन

सारांश : हिंदी साहित्य के इतिहास में मुंशी प्रेमचंद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें "उपन्यास सम्राट" के नाम से सम्मानित किया जाता है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं, ग्रामीण जीवन, निर्धनता, शोषण, स्त्री-स्थिति, नैतिक मूल्यों तथा मानवता का अत्यंत सजीव चित्रण किया। प्रस्तुत शोध-लेख में प्रेमचंद के व्यक्तित्व, उनके संघर्षपूर्ण जीवन, साहित्यिक विकास तथा प्रमुख कृतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही उनके साहित्यिक आदर्शों एवं समाज सुधारक दृष्टिकोण को भी रेखांकित किया गया है।

मुख्य शब्द : प्रेमचंद, उपन्यास सम्राट, हिंदी साहित्य, यथार्थवाद, समाज सुधार, मानवता।

प्रस्तावना : मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के ऐसे महान रचनाकार हैं जिन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर समाज परिवर्तन का प्रभावशाली साधन बनाया। उन्होंने भारतीय जनजीवन की पीड़ा, संघर्ष, सामाजिक विषमता तथा नैतिक पतन को अत्यंत यथार्थ रूप में चित्रित किया। हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले प्रेमचंद ने साहित्य को मानवता की सेवा का माध्यम माना। उनकी रचनाओं में किसान, मजदूर, स्त्री, निम्नवर्ग तथा उपेक्षित समाज की आवाज़ सुनाई देती है। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक माना जाता है।

प्रेमचंद का प्रारंभिक जीवन : मुंशी प्रेमचंद का जन्म जुलाई 1880 में वाराणसी के निकट लमही गाँव में एक मध्यमवर्गीय कायस्थ परिवार में हुआ। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। उनके पिता आजायबलाल डाक विभाग में क्लर्क थे। बाल्यावस्था में ही उनकी माता का निधन हो गया, जिसके कारण उनका बचपन अत्यंत अभाव और संघर्ष में बीता। विमाता से अपेक्षित स्नेह न मिलने के कारण उनके मन में करुणा और

संवेदनशीलता का विकास हुआ।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर हुई तथा बाद में उन्होंने उर्दू और फ़ारसी का अध्ययन किया। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद उनमें अध्ययन के प्रति गहरी रुचि थी। वे पुस्तक विक्रेताओं की दुकानों पर बैठकर पुस्तकें पढ़ते थे। इसी अध्ययनशीलता ने उनके भीतर साहित्यिक चेतना का विकास किया।

संघर्षमय जीवन और शिक्षा : प्रेमचंद का जीवन निरंतर संघर्षों से भरा रहा। किशोरावस्था में ही उनका विवाह कर दिया गया। कुछ समय बाद पिता की मृत्यु हो गई, जिससे पूरे परिवार की जिम्मेदारी उनके ऊपर आ गई। आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी। स्वयं प्रेमचंद ने लिखा है—

"पाँव में जूते न थे, देह पर कपड़े न थे, महँगाई अलग।"

इन परिस्थितियों में भी उन्होंने शिक्षा जारी रखी। अध्यापक की नौकरी करते हुए उन्होंने इंटरमीडिएट तथा बी.ए. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। उनका यह संघर्षशील व्यक्तित्व उनके साहित्य में भी स्पष्ट दिखाई देता है।

साहित्यिक जीवन का आरंभ : प्रेमचंद ने प्रारंभ में उर्दू भाषा में लेखन किया। उनकी प्रारंभिक रचनाएँ "नवाबराय" नाम से प्रकाशित हुईं। 1907 में प्रकाशित कहानी-संग्रह सोज़े-वतन में देशभक्ति की भावना प्रबल थी। अंग्रेज़ सरकार ने इस पुस्तक को जब्त कर लिया। इसके बाद उन्होंने "प्रेमचंद" नाम से लेखन आरंभ किया।

उनकी प्रारंभिक प्रसिद्ध कहानियों में बड़े घर की बेटी, पंच परमेश्वर तथा नमक का दरोगा विशेष उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं में न्याय, नैतिकता और सामाजिक यथार्थ का सशक्त चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य : प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास को नई दिशा प्रदान की। उनके उपन्यास केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहे, बल्कि समाज की वास्तविक समस्याओं के दर्पण बन गए।

उनके प्रमुख उपन्यास हैं—

सेवासदन
प्रेमाश्रम
निर्मला
कर्मभूमि
गोदान

इन उपन्यासों में भारतीय समाज की समस्याओं, स्त्री-जीवन, किसान-शोषण, सामाजिक कुरीतियों तथा नैतिक संघर्षों का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया गया है। विशेष रूप से गोदान को हिंदी का सर्वश्रेष्ठ यथार्थवादी उपन्यास माना जाता है।

कहानी कला और यथार्थवाद : प्रेमचंद हिंदी कहानी साहित्य के भी महान शिल्पी थे। उन्होंने कहानी को आदर्शवाद से निकालकर यथार्थवाद की भूमि पर स्थापित किया। उनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन, गरीबी, मानवीय संवेदनाएँ तथा सामाजिक विषमताएँ अत्यंत स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत हुई हैं।

उनकी प्रसिद्ध कहानियों में—

ईदगाह
कफन
पूस की रात
नमक का दरोगा

आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

ईदगाह जैसी कहानी में बाल मनोविज्ञान और मातृस्नेह का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। वहीं कफन में

समाज की विडंबनाओं और निर्धनता की क्रूर सच्चाई को उजागर किया गया है।

प्रेमचंद की साहित्यिक दृष्टि : प्रेमचंद साहित्य को समाज परिवर्तन का साधन मानते थे। उनका प्रसिद्ध कथन है—
"साहित्य राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं, बल्कि उसके आगे मशाल दिखाने वाली शक्ति है।"
उनकी दृष्टि में साहित्यकार का कर्तव्य समाज को सही दिशा प्रदान करना है। वे धर्म को मानवता और नैतिकता से जोड़कर देखते थे, किंतु अंधविश्वास, पाखंड और रुढ़ियों के विरोधी थे।
उनके साहित्य में मानवतावाद, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय चेतना तथा लोकमंगल की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है।

संपादन एवं साहित्य सेवा : प्रेमचंद ने साहित्य सृजन के साथ-साथ संपादन कार्य भी किया। उन्होंने काशी में "सरस्वती प्रेस" की स्थापना की। बाद में माधुरी पत्रिका का संपादन किया तथा 1930 में हंस पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया।

इन पत्रिकाओं के माध्यम से उन्होंने हिंदी साहित्य को नई दिशा प्रदान की तथा अनेक नवोदित लेखकों को प्रोत्साहित किया।

अंतिम समय और निधन : आर्थिक कठिनाइयों से मुक्ति पाने के उद्देश्य से वे 1934 में बंबई फिल्म उद्योग से जुड़े, किंतु वहाँ का वातावरण उनके स्वतंत्र विचारों के अनुकूल नहीं था। अतः वे वापस लौट आए। लगातार खराब स्वास्थ्य के कारण 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया।
यद्यपि उनका जीवन संघर्षों से भरा रहा, फिर भी उन्होंने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज को अमूल्य धरोहर प्रदान की।

निष्कर्ष : मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के ऐसे महान रचनाकार हैं जिन्होंने साहित्य को समाज का दर्पण बनाया। उनका व्यक्तित्व संघर्ष, संवेदना, मानवता और आदर्शवाद का प्रतीक है। उन्होंने अपने साहित्य में भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं को अत्यंत सजीव रुप में प्रस्तुत किया।
उनकी रचनाएँ केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना की प्रेरक धरोहर हैं। आज भी उनका साहित्य मानवता, समानता और नैतिक मूल्यों की प्रेरणा देता है। हिंदी साहित्य में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. कौशल, कमला — प्रेमचंद : रचनाकार के आयाम
2. बाबूराम — प्रेमचंद और उनके उपन्यास कला
3. टंडन, प्रभ नारायण — प्रेमचंद
4. चुघ, सत्यपाल — राष्ट्रीय जागरण और प्रेमचंद के उपन्यास
5. पाठक, श्याम (सं.) — प्रेमचंद : व्यक्तित्व और रचना
6. पुरी, रेखा — प्रेमचंद साहित्य में व्यक्तित्व और समाज

•